The Opinion, Vol. 5, No. 10, July-December, 2016 **ISSN : 2277-9124**

बहराइच तहसील–सदर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता का एक अध्ययन

डॉ0 शिवम् श्रीवास्तव*
तारकेश्वर स्वरुप मणि**

शिक्षा मानव जीवन की आधार शिक्षा है, और विद्यालय समाज का लघुरूप है। विगत कुछ शाताब्दियों में मानव सभ्यता का तेजी से विकास हुआ है जिसके कारण भौतिक आवश्यकताओ में तेजी से वृद्धि हुई है। आज का युग विज्ञान एवं औद्योगिकीकरण का युग है। बढ़ती हुई जनसंख्या एवं भौतिक उन्नति के कारण प्राकृतिक संसाधनों का तेजी से दोहन हो रहा है। पारिस्थतिकीय असन्तुलन बढ़ा है। और प्रदूषण में वृद्धि हुई है। इसकी रोकथाम के लिए जहॉ एक ओर सरकारी नियम व कानून बनाए जा रहे है वही दूसरी ओर सामाजिक जागरूकता की भी आवश्यकता है। जनजागरण के लिए विद्यालय, शिक्षक एवं शिक्षा की महति भूमिका है।

औद्योगिकीकरण एवं बढ़ती जनसंख्या एवं घटता वन क्षेत्र एवं गन्दगी फैलने के कारण प्राकृतिक पर्यायवरण जल, वायु, भूमि आदि सभी प्रदूषित हो रहे है।

आज पर्यायवरण की समस्या विश्ववापी बन चुकी है क्योकि यह धीरे–धीरे विकट रूप धारण कर रही है। आज वर्तमान समय में प्रकृति के साथ छेड़ छाड़ करने तथा पर्यायवरण को दूषित करने के भयंकर परिणाम सामने आ रहे है।

पर्यायवरण एवं मनुष्य दोनो का असतित्व एक दूसरे के स्वस्थ्य संम्बन्धों पर टिका हुआ है। पर्यायवरण मनुष्य के लिए अपरिहार्य है। तो पर्यायवरण की सुरक्षा साफ सुथरा एवं स्वच्छ बनाए रखना मनुष्य के हाथों में है।

इस परिपेक्ष्य में पर्यायवरण प्रदूषण के बारे में जनजागरूकता अति आवश्यक है। जनजागरूकता लाने में शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका प्राचीन काल से ही अहम रही है। शिक्षक एवं विद्यालय अपने प्रभाव पुंज की गरिमा के नाते प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। जन जागरूकता बढ़ानें एवं व्यापक जानकारी को प्रसारित करने हेतु इससे सम्बन्धित मुद्दों पर गोष्ठियों एवं परिचर्चाओं का आयोजन और शिक्षा एवं विद्यार्थियों को इससे जोड़ना आवश्यक हो गया है। ताकि सरकारी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों में पर्यायवरण शिक्षा के महत्व की जानकारी दी जा सके।

ऐसा कदापि नही है कि लोग पर्यायवरणीय समस्याओं एवं संकट के प्रति जागरूक नही है। समय समय पर पर्यावरणीय चेतना जागृत करने हेतु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रकार के कार्यकमों का आयोजन एवं आन्दोलन होता रहा है। तथा कुछ महत्वपूर्ण दिवसों को निश्चित किया गया है। जैसे–पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल, विश्व पर्यायवरण दिवस 5 जून, ओजोन दिवस 16 सितम्बर, विश्व जल दिवस 22 मार्च, राष्ट्रीय पर्यायवरण चेतना अभियान, चिपको आन्दोलन, एप्पिको आन्दोलन, शांत घाटी आन्दोलन आदि।

इनके अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण अधिनियम न्यायिक प्रावधान किये गए है। जैसे–दी फैक्टीज एक्ट 1948, दी रिवर बोर्ड 1956, प्ले ऑफ लाउडस्पीकर्स एक्ट 1955, वन जीव संरक्षण अधिनियम 1972, जल प्रदूषण निवारण एवं नियत्रण अधिनियम 1974, पर्यायवरण संरक्षण अधिनियम 1986, राष्ट्रीय पर्यायवरण अपरलेट अर्थोरिटी अधिनियम 1997, आदि के द्वारा भी पर्यायवरण को बचाने का प्रयास किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों अध्ययनरत् छात्रो में पर्यायवरण जागरूकता से सम्बन्धित है।

* **एसो.प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष–शिक्षाशास्त्र विभाग 'किसान पी.जी.कॉलेज, बहराइच**
** **असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र**

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है।

1. बहराइच तहसील–सदर में सरकारी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यायवरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध में उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखत शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. सरकारी एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग के आधार पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. पर्यावरण के प्रति ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।

शोध समस्या का सीमाकंन :–

1. बहराइच तहसील सदर के दो ग्रामीण एवं नगरीय विद्यालयों को अध्ययन के लिए चुना गया है।
2. उपर्युक्त दोनों ही प्रकार के विद्यालयों से 50–50 छात्रों को चुना गया है।
3. यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के सत्र 2015–16 के विद्यार्थियों पर किया गया है।
4. इस शोध कार्य में केवल हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शोध के उद्देश्यों की अभिपूर्ति हेतु टी परीक्षण प्रयोग किया गया है। टी परीक्षण हेतु अन्य सांख्यिकी तकनीको का भी प्रयेाग किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक अनुसंधान के अर्न्तगत सर्वेक्षण प्रकार का अनुसंधान है। सर्वेक्षण विधि को अपनाकर प्रदत्तों का संकलन किया गया है। वस्तुतः यह विधि शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण विधि मानी गयी है। करलिगंर (1978) के अनुसार ''सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है, जिसके अर्न्तगत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें चयनित प्रतिदर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है, ताकि उनमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरो के घटनाओं, वितरणों तथा पारस्परिक अंतः–सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।'' प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या, प्रतिदर्श, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरो का विवरण अग्रवत इस प्रकार से है।

शोध की जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन के जनसंख्या को इस प्रकार परिभाषित किया गया है। उत्तर प्रदेश राज्य के बहराइच जनपद के तहसील–सदर के माध्यमिक विद्यालयों के अध्ययनरत सत्र 2015–16 विद्यार्थी शोध की जनसंख्या है। इस जनसंख्या से चयनित न्यादर्श का विवरण नीचे दिया गया है।

शोध का न्यादर्श :–

इस सन्दर्भ में आर.ए.शर्मा का कथन है कि सामाजिक विषयों व्यवहारिक विज्ञानों के शोध कार्य एवं सांख्यिकीय विधियों के लिए न्यादर्श मूल आधार होता है। यदि न्यादर्श का चयन समुचित रूप से नही किया गया तों कोई सांख्यिकीय विधि परिणाम को नही सुधार सकती। वास्तव में न्यादर्श शोध की प्रमुख प्रविधि है। शोधकर्ता को इसके ज्ञान ? एवं कौशल की आवश्यकता होनी चाहिए। न्यादर्श के चयन में ऐसे विधियों का प्रयोग किया जाता है कि जनसंख्या की चयन की गई इकाईयां प्रतिनिधित्व कर सके । प्रत्येक इकाई को न्यादर्श में सम्मिलित होने का समान अवसर दिया जाए। शोध के निष्कर्षो के सामान्यीकरण ने न्यादर्श का आकार उसकी प्रविधि पर निर्भर होता है। एक शुद्ध रूप में प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श से शोध सामान्यीकरण के बारे में अधिक से अधिक प्रस्तुत करता है। इसके अनुरूप ही न्यादर्श का चयन किया गया है। शोधकर्ता ने न्यादर्श का चयन स्तरीकृत, यादृच्छिकी न्यादर्श एवं

सोद्देश्य न्यादर्श के अनुसार किया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मात्र दो ग्रामीण एवं दो शहरी विद्यालयों का चयन किया गया इनमें प्रत्येक विद्यालय से 25 छात्र छात्राओं का चयन स्तरीकृत, यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है। न्यादर्श का विवरण निम्नवत है–

	ग्रामीण	**शहरी**	**ग्रामीण**	**शहरी**
विद्यालय का नाम	श्यामा देवी चन्द्र शेखर आजाद बालिका इण्टर कालेज रिसिया	राजकीय बालिका इण्टर कालेज, बहराइच	गायत्री इण्टर कालेज , सिसई सलौन रिसिया	राजकीय इण्टर कालेज, बहराइच।
विद्यार्थियों की संख्या	25	25	25	25

चरो का विवरण :–

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्शो का वर्गीकरण चरो के सम्बन्ध में निम्नवत है –

लिंग के आधार पर वर्गीकरण :–

क्रम संख्या	लिंग	संख्या
1	छात्र	50
2	छात्राए	50

निवास स्थान के आधार पर वर्गीकरण :–

क्रम संख्या	आवासीय स्थिति	संख्या
1	ग्रामीण	50
2	शहरी	50

विद्यालय वर्ग के आधार पर वर्गीकरण :–

क्रम संख्या	विद्यालयों के प्रकार	संख्या
1	शासकीय	50
2	अशासकीय, सहायता प्राप्त	50

डॉ.डी.एन.श्रीवास्तव एवं शशी प्रभा दूबें द्वारा निर्मित और आरोही मनोविज्ञान केन्द्र जवलपुर द्वारा प्रकाशित 'पर्यावरणीय मूल परीक्षण निर्देशिका' का प्रयोग करते हुऐ प्रदत्तों का संकल्न किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन मे सरकारी,सहयता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जगरुकता एवं ग्रामीण/शहरी छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता के तुलनात्मक अध्ययन मे अनुसंधान कर्ता को जो समंक प्राप्त हुऐ है उसके सम्यक विश्लेषणोंपरान्त निम्नलिखित विश्लेषण प्राप्त हुए।

अध्ययन के उद्देश्य के आधार पर शोधकर्ता द्वारा प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है।

1. बहराइच तहसील सदर में सरकारी एवं सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यलायों के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नही है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में लिंग भेद के आधार पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता में कोई अन्तर नही है। छात्र एवं छात्राओं में पर्यावरण के प्रति समान जागरूकता है। जिससे यह सिद्ध होता है कि पर्यावरण जागरूकता के प्रति लिंग भेद का प्रभाव नही है।
3. प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा यह भी निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं नगरीय स्तर के विद्यार्थियों का पर्यावरण के प्रति समान दृष्टिकोण है। दोनो क्षेत्रों के विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति लगभग समान रूप की जागरूकता रखते है।

भावी शोध के लिए सुझाव :–

प्रत्येक अध्ययन सत्य की खोज में एक छोटा सा प्रयास ही समझा जाना चाहिए। प्रत्येक अध्याय के प्रसंग में कुछ नई दिशाएं दिखाई पड़ने लगती है और ऐसे प्रश्न सामने आते है जिनके सम्बन्ध में इस बात की आवश्यकता का अनुभव होने लगता है कि इन नई दिशाओं में भी कुछ खोज होनी चाहिए । अध्ययन के क्रम में कुछ ऐसी सीमाएं भी दिखाई पड़ने लगती है जिनमें ऐसा लगता है कि अध्ययन बिन्दुओं पर ही अधिक गहराई तथा अधिक विस्तार से अध्ययन करने की आवश्यकता है। वर्तमान अध्ययन के परिणामों के आधार पर भावी अनुसंधान हेतु निम्नांकित सुझाव दिया जा रहा है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन एक लघु शोध है जो केवल बहराइच तहसील सदर में स्थित माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर किया गया है। आगे इस विषय पर बड़े पैमाने पर शोध करने की आवश्यकता एवं सम्भावना है। जिससे हो सकता है महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त हो और पर्यावरण संरक्षण के कार्य को सही दिशा प्रदान की जा सके।
2. ग्रामीण एवं नगरीय स्तर के अलावा छात्रों की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, जाति, आदि को भी आधार बनाया जा सकता है।
3. भावी शोध में विद्यार्थियों कर अध्ययन वर्गवार कला विज्ञान , वाणिज्य एवं तकनीकी वर्ग किया जा सकता है।
4. माध्यमिक स्तर के अलावा इसे प्राथमिक एवं उच्च स्तर महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों में पर्यावरण जागरूकता जैसे अहम विषय पर अध्ययन किया जा सकता है।
5. इस अध्ययन में केवल 100 छात्र छात्राओं को ही न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है। अतः वृहत न्यादर्श लेकर नया अध्ययन किया जा सकता है।
6. अगले अध्ययन में पर्यावरणीय जागरूकता हेतु विद्यालय में होने वाली पाठ्य–सहगामी क्रियाओं पर अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गैरेट हेनरी ई0 : शिक्षा एवं मनोवैज्ञानिक में सांख्यिकी, लुधियाना कल्याणी पब्लिशर्स, संस्करण 8वां 1994।
2. राय पारसनाथ : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल संस्करण 10वां, 2005।
3. गोयल डा0 एम0के0 : पर्यावरण शिक्षा।
4. शर्मा डा0वी0एल0 : पर्यावरण नियोजन एवं परिस्थिति का विकास।
5. विश्वकर्मा कनकलता : 2002 पी0एच0डी0
6. योजना : जुलाई 2004, पृष्ठ संख्या –2
7. विज्ञान प्रगति : जून 2004 पृष्ठ संख्या–7, 19, 35, 43।
8. चाणक्य सिविल सर्विसेज टूडे : अगस्त 2004,पृष्ठ संख्या 32, 36।
9. अग्रवाल, एस0के0 1988 : एन्वायरमेण्टल इश्यूज़ एण्ड रिसर्च इन इण्डिया, हिमांशु पब्लिकेशन।
10. अम्बस्ट, आर0एस0 1992 : इकोलाजिकल इन्वायरमेण्टल स्टडीज इन एजूकेशन, बूच, एम0बी0 (सम्पादित)
11. कोटलिया डा0 के0 : पर्यावरण भविष्य हमारा सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण पृष्ठ–86।
12. पाठक, अरूण कुमार : पर्यावरण अध्ययन, सिल्वर लाईन पब्लिकेशन्स, फरीदाबाद, पृष्ठ 236।
13. गोयल, डॉ0एम0के0 : पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
14. जैन, एच0सी0 : पर्यावरण संचार शिक्षा एवं प्रबन्धन, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
15. कपिल, एच0के0 : अनुसंधान विधियों, व्यवहारपरक विज्ञनों में, हर प्रसाद भार्गव, 4/230 कचहरीघाट, आगरा।